17 अप्रैल 2014, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 37, अंक : 2 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अप्रैल (द्वितीय), 2014 (वीर नि. संवत्-2540) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय में अन्तिम वर्ष के छात्रों का -

विदाई समारोह संपन्न

जयपुर (राज.) : ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 31 मार्च को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों का विदाई समारोह संपन्न हुआ।

इस प्रसंग पर प्रात: पंचतीर्थ जिनालय पर जिनेन्द्र पूजन और रात्रि में भव्य जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर शास्त्री द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों द्वारा आयोजित दो सत्रों के विदाई समारोह में प्रथम सत्र के अध्यक्ष पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल तथा मुख्य अतिथि तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं द्वितीय सत्र के अध्यक्ष डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल तथा मुख्य अतिथि पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. दीपकजी वैद्य जयपुर, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर, श्री ताराचंदजी सोगानी जयपुर, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री जयपुर, पण्डित गोम्मटेशजी शास्त्री जयपुर, श्रीमती कमला भारिल्ल, श्रीमती गुणमाला भारिल्ल, श्रीमती श्रीकान्ता छाबड़ा एवं कु. प्रतीति पाटील इत्यादि महानुभाव मंचासीन थे।

कार्यक्रम में शास्त्री तृतीय वर्ष के सभी विद्यार्थियों ने अपने अनुभव सुनाते हुए महाविद्यालय को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्या अध्ययन का सर्वश्रेष्ठ केन्द्र बताया तथा स्वयं को सौभाग्यशाली बताया। महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी एवं विशिष्ट अतिथियों ने विद्यार्थियों को उज्ज्वल भविष्य बनाने की प्रेरणा, आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन दिया।

डॉ. भारिल्ल ने तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों से कहा कि अभी तक तो आप यहाँ अपने शिक्षकों से शिक्षा ले रहे हैं। उन्होंने आपको सर्वप्रकार से योग्य बनाया है। अब आपको बाहर कार्यक्षेत्र में जाकर अपनी योग्यता सिद्ध करनी है। अत: अब उसके लिए तैयार हो जाओ। इसप्रकार डॉ. भारिल्ल ने सभी विद्यार्थियों को तत्त्वज्ञान का प्रचार करने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर शास्त्री द्वितीय वर्ष के छात्रों द्वारा अपने अग्रजों को निम्न संदेश दिया गया -

(शेष पृष्ठ 4 पर ...)

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन

के अधिवेशन में भाग लेने हेतु

- अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की सभी शाखाओं से अपेक्षा है कि अपने प्रगति विवरण एवं वर्ष के दौरान किये गये उल्लेखनीय कार्यों का ब्यौरा दिनांक 30 अप्रैल 2014 तक हमारे केन्द्रीय कार्यालय को अवश्य भेज दें। ताकि अधिवेशन में पुरस्कृत करने हेतु उनके बारे में विचार किया जा सके।

- यदि आप अधिवेशन में अपने कोई विशिष्ट सुझाव प्रस्तुत करना चाहते हैं तो कृपया वे सुझाव हमें लिख भेजें ताकि अधिवेशन में बोलने हेतु आपको अवसर दिया जा सके।

- फैडरेशन की सभी शाखाओं से अपेक्षा है कि दिनांक 24 मई को दिल्ली में आयोजित होने जा रहे 37वें अधिवेशन में भाग लेने हेतु आने वाले अपने प्रतिनिधियों की सूचना हमारे केन्द्रीय कार्यालय, जयपुर अवश्य भेजें, ताकि उनके आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था संभव हो सके।

- रिकॉर्ड अपडेट करने हेतु जिन शाखाओं ने अपने विवरण अभी तक हमें नहीं भिजवाये हैं, वे अपने विवरण शीघ्र भिजवा दें। **- महामंत्री**

- अधिवेशन के लिये दिल्ली संपर्क सूत्र -

श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान परमागम मंदिर ट्रस्ट, 2/76, भीम गली, विश्वास नगर, दिल्ली-32 फोन-9810094987, 9312558753, 9582883020, 9350222646 (मंगलसेन जैन), 9212199105

Email-kundkundtrust@gmail.com;

website : www.kundkundtrust.com; www.kundkundtrust.org

जैन सोशल ग्रुप इन्टरनेशनल फैडरेशन के अन्तरराष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर -

डॉ. भारिल्ल के विशेष व्याख्यान

जैन सोशल ग्रुप इन्टरनेशनल फैडरेशन का स्वर्ण जयन्ती समारोह एवं अन्तरराष्ट्रीय अधिवेशन दिनांक 29 व 30 मार्च को राजकोट में संपन्न हुआ, जिसमें विश्वभर से आये हुये 4000 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

समारोह के प्रथम दिन जेवरचंद मेघाणी ऑडिटोरियम में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का **'अहिंसा'** विषय पर विशेष व्याख्यान हुआ।

दिनांक 30 मार्च को दिगम्बर जैन मंदिर में डॉ. साहब का 47 शक्तियों पर प्रवचन हुआ।

प्रशिक्षण

की प

ा शिविर

त्रिका

सम्पादकीय –

अच्छी पड़ोसिनें भी पुण्य से मिलती हैं

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

प्रथमानुयोग में ६३ शलाका पुरुषों के भूत और भावी भवों की चर्चा से पुराण भरे पड़े हैं।

भगवान नेमिनाथ ने द्वारका जलने की घोषणा बारह वर्ष पूर्व कर दी थी। साथ ही यह भी स्पष्ट कर दिया था कि किस निमित्त से, कैसे और कब ह्न यह सब–कुछ घटित होगा। अनेक उपायों के बाद भी वह सब कुछ उसी रूप में घटित हुआ।

भगवान आदिनाथ ने मारीचि के बारे में एक कोड़ा–कोड़ी सागर तक कब क्या घटित होने वाला है ह्न सब–कुछ बता ही दिया था। क्या वह सब–कुछ पहिले से निश्चित नहीं था? असंख्य भव पहिले यह बता दिया गया था कि वे चौबीसवें तीर्थंकर होंगे। तब तो उनके तीर्थंकर प्रकृति का बंध भी नहीं हुआ था; क्योंकि तीर्थंकर प्रकृति बंध जाने के बाद असंख्य भव नहीं हो सकते। तीर्थंकर प्रकृति को बांधने वाला तो उसी भव में, या तीसरे भव में, अवश्य मुक्ति को प्राप्त कर लेता है। अत: यह भी नहीं कहा जा सकता कि कर्म बंध जाने से उनका उतना भविष्य निश्चित हो गया था।

यहाँ तक कि पूजन–पाठ में भी कदम–कदम पर क्रमबद्धपर्याय का स्वर मुखरित होता सुनाई देता है

''भामण्डल की द्युति जगमगात,
भवि देखत निजभव सात–सात।''

तीर्थंकर भगवान के प्रभामण्डल में भव्यजीवों को अपने–अपने सात–सात भव दिखाई देते हैं। उन सात भवों में तीन भूतकाल के, तीन भविष्य के एवं एक वर्तमान भव दिखाई देता है।

इसके अनुसार प्रत्येक भव्य के कम से कम भविष्य के तीन भव तो निश्चित रहते ही हैं, अन्यथा वे दिखाई कैसे देते ?

''क्रमबद्धपर्याय से आशय यह है कि **इस परिणमनशील जगत की परिणमन व्यवस्था क्रमनियमित है। जगत में जो भी परिणमन निरन्तर हो रहा है, वह सब एक निश्चित क्रम में व्यवस्थितरूप से हो रहा है।** स्थूल दृष्टि से देखने पर जो परिणमन अव्यवस्थित दिखाई देता है, वह भी नाटक के मंच पर पड़ी गरीबी की प्रतीक टूटी खाट के प्रदर्शन की भाँति सुव्यवस्थित व्यवस्था के अंतर्गत ही है।''

(क्रमश:)

(पृष्ठ 1 का शेष...)

जिनशासन के हम आराधक, निजपुर ही बस ध्येय है।

अंत में शास्त्री तृतीय वर्ष के सभी छात्रों को फोटो, श्रीफल और दोनों दादा के अभिनन्दन ग्रन्थ व डॉ. भारिल्ल कृत तत्त्वार्थमणिप्रदीप ग्रन्थ भेंटकर सम्मानित किया गया।

कृत्रिम गुफा सहित जंगल में मुनिराजों की धर्माराधना को मनोहारी दृश्यों से प्रवचन हॉल को सुसज्जित किया गया, जो सभी के लिये आकर्षण का केन्द्र रहा।

कार्यक्रम के अन्तर्गत महाविद्यालय के इस सत्र (2013–14) के विशिष्ट पुरस्कारों की घोषणा की गई, जिसमें विद्यालय की पाँचों कक्षाओं में आदर्श कक्षा का पुरस्कार **उपाध्याय वरिष्ठ** कक्षा को तथा आदर्श विद्यार्थी का पुरस्कार **ऋषभ जैन (उपाध्याय वरिष्ठ)** को दिया गया। इसके अतिरिक्त कक्षा के आदर्श छात्र के रूप में उपाध्याय कनिष्ठ से **शुभांशु जैन कोटा,** उपाध्याय वरिष्ठ से **सौरभ शाह मड़देवरा,** शास्त्री प्रथम वर्ष से **अभिषेक जैन हीरापुर,** शास्त्री द्वितीय वर्ष से **प्रशांत जैन अमरमऊ** और शास्त्री तृतीय वर्ष से **अभय जैन सुनवाहा** को पुरस्कृत किया गया। साथ ही विशेष सहयोगी के रूप में पृथक् से चिकित्सा सेवा की व्यवस्था में सहयोग करने हेतु **प्रतीक शाह मुम्बई** को पुरस्कृत किया गया।

विदाई एवं दीक्षान्त समारोह संपन्न

ध्रुवधाम–बांसवाड़ा (राज.) : यहाँ आचार्य अकलंकदेव जैन न्याय महाविद्यालय के द्वितीय वर्ष के छात्रों द्वारा तृतीय वर्ष के छात्रों को दिनांक 5 अप्रैल को विदाई दी गई तथा दिनांक 6 अप्रैल को दीक्षान्त समारोह का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर एवं ब्र. यशपालजी जैन जयपुर के प्रवचनों का लाभ मिला।

कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर ने की। कुलाधिपति के पद पर ब्र.यशपालजी जैन जयपुर मंचासीन थे। मुख्य अतिथि के रूप में श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा, श्री धनपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा के अतिरिक्त विद्वानों में पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री परतापुर, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित रीतेशजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित भोगीलालजी उदयपुर, पण्डित आकाशजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित सतीशजी शास्त्री ध्रुवधाम, डॉ. ममता जैन बांसवाड़ा, श्रीमती प्रेक्षा जैन ध्रुवधाम आदि उपस्थित थे।

इस अवसर पर शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों एवं आगन्तुक महानुभावों ने अपने विचार व्यक्त किये।

अन्त में शास्त्री अन्तिम वर्ष के 9 छात्रों द्वारा शपथ–ग्रहण की गई तथा उन्हें न्याय शास्त्री की उपाधि से अलंकृत किया गया। संचालन पण्डित राजकुमारजी शास्त्री एवं पण्डित प्रवीणजी शास्त्री द्वारा किया गया।

महाविद्यालय : उपयोगिता एवं आवश्यकता

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

सचमुच यह हर्ष का ही विषय है कि आज अपनी स्थापना के 37 वर्ष पूर्ण करने के बाद भी, जबकि पण्डित टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय से स्नातक होकर **648** विद्वान समाज और देश के विभिन्न भागों में कार्य कर रहे हैं और उसके बाद स्थापित अन्य महाविद्यालयों से भी प्रतिवर्ष अनेकों स्नातक विद्वान समाज को प्राप्त हो रहे हैं, आज भी समाज में विद्वानों की मांग निरंतर बनी हुई है और पर्याप्त मात्रा में उनकी आपूर्ति नहीं हो पा रही है।

कभी–कभी इसी निराशा में कुछ लोग कहने भी लगते हैं कि ऐसे महाविद्यालय की उपयोगिता ही क्या है जब उन्हें तो सस्ते में विद्वान ही नहीं मिलते हैं।

उक्त दृष्टिकोण वाले लोगों से मेरा विनम्र निवेदन है कि उन्हें एक बार बैठकर शान्तिपूर्वक इस विषय पर विचार करना चाहिए कि –

महाविद्यालय की उपयोगिता और सफलता का पैमाना क्या है ?

क्या यह, कि सस्ते में विद्वान और कार्यकर्ता मिलें या यह कि उच्चकोटि के विद्वान मिलें, जिनवाणी मर्मज्ञ विद्वान तैयार हों जो सिद्धों से सीधे बातें कर सकें, जिनवाणी माता से सीधे ही बतिया सकें, जिनवाणी माता के हार्द को समझ सकें, मर्म को समझ सकें, औरों को समझा सकें?

अरे ! महाविद्यालय के स्नातक सस्ते में नहीं मिल पाते हैं यह महाविद्यालय की सफलता का प्रतीक है या असफलता का ?

कोई उत्पाद बाजार में ऊँची कीमत पर बिकता है, इसके मायने क्या होते हैं ?

1. एक तो यह कि वह उत्पाद ऊँची गुणवत्ता का है।

2. और दूसरा यह कि उस उत्पाद की बाजार में मांग ज्यादा है और उपलब्धता कम, उत्पादन कम।

उक्त दोनों ही तथ्य उक्त उत्पाद की सार्थकता दर्शाते हैं, उपयोगिता दर्शाते हैं, आवश्यकता दर्शाते हैं या निरर्थकता और अनुपयोगिता दर्शाते हैं?

ज़रा विचार तो करें कि यदि मांग अधिक है और उत्पादन कम, यदि समाज को अभी भी पर्याप्त मात्रा में विद्वान नहीं मिल पाते हैं तो महाविद्यालय की क्षमता बढ़ाये जाने की आवश्यक्ता है या महाविद्यालय बंद करने की ?

अरे भाई ! यह तो महाविद्यालय की दोहरी सफलता है कि वह समाज में विद्वानों की आपूर्ति तो कर ही रहा है, साथ ही उनकी और अधिक मांग भी पैदा कर रहा है।

एक समय था जब समाज में विद्वानों की उपलब्धता भी नहीं थी और ऐसी कोई मांग भी नहीं थी कि कोई सक्षम विद्वानों का अभाव भी महसूस करे, ऐसे समय में जैसे–जैसे महाविद्यालय ने समाज को दक्ष और सक्षम विद्वान प्रदान किये, उनके क्रियाकलापों और उपलब्धियों को देखकर समाज को उन विद्वानों की अधिकाधिक महत्ता भासित होने लगी और समाज में अपने–अपने यहाँ विद्वानों की उपलब्धि की चाहत पैदा होने लगी। यह कोई साधारण बात नहीं, यह एक युगान्तरकारी परिवर्तन है।

विद्वान आत्मार्थी और अध्यात्म प्रेमी तो हैं, उनमें तत्त्वप्रचार की ललक एवं समर्पण की भावना भी है; पर वे कोई त्यागी व्रती तो हैं नहीं, उनके भी घर–परिवार होते ही हैं और उनके लालन–पालन के लिए उन्हें एक सम्मानजनक आजीविका की भी आवश्यकता होती है, ऐसे में जब उन्हें कहीं अन्यत्र अपनी योग्यता के अनुरूप उचित, उच्च वेतनमान प्राप्त होते हैं तो क्या हमारा उनसे यह अपेक्षा करना अनुचित नहीं है कि वे उन्हें ठुकराकर अपेक्षाकृत बहुत ही कम वेतनमान में समाज के बीच कार्य करें ?

उक्त निर्णय लेने वाले उनके परिवार में वे स्वयं अकेले भी तो नहीं हैं, उनके अन्य परिजन और शुभचिंतक भी आखिर कैसे उन्हें ऐसा कुछ करने की सलाह दे सकते हैं ?

उक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए क्या यह उचित नहीं है कि समाज ही उनकी विशिष्ट योग्यता और समाज के प्रति उनके अमूल्य और विलक्षण योगदान को देखते हुए उन्हें उचित मानदेय देकर अपने यहाँ बसाये और ऐसी अनुकूलतायें प्रदान करे कि वे निश्चिंत होकर तत्त्वप्रचार के काम के प्रति समर्पित हो सकें।

अपनी लौकिक आवश्यकताओं की तात्कालिक पूर्ति के लिए हम क्या नहीं करते हैं ? क्या कीमत नहीं चुकाते हैं ?

तब फिर अपने भगवान आत्मा के अविनाशी कल्याण में सहायक समाज के अपने ही इन सपूतों के प्रति हमारे हृदय में संकोच क्यों हो?

विचार करें ! क्या हमें अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन की आवश्यकता नहीं ?

लोग पूछते हैं कि आपके महाविद्यालय में पढ़ने के बाद स्कोप क्या है?

अब मैं क्या बतलाऊँ क्या स्कोप है ?

पूज्य गुरुदेवश्री तो कहा करते थे कि भाई ! यह तो अशरीरी होने का मार्ग है।

अब तू जो है, जैसा है, जहाँ खड़ा है, वहाँ से लेकर भगवान बनने तक, कुछ भी बन सकता है।

तू तीर्थंकरों और गणधरों के समान मोक्षमार्ग का प्रवक्ता बन सकता है।

तू स्वयं मोक्षमार्ग में लग सकता है और अन्यों को लगा सकता है।

अरे भाई ! यह तो चिंतामणी रत्न है, तू जो चाहेगा वही बन सकता है।

कोई कह सकता है कि यह सब तो ठीक है पर कुछ रुपया–पैसा भी मिलेगा या नहीं ?

अरे भाई ! यूं तो यहाँ से पढ़कर निकले अनेकों लोग बड़ी–बड़ी पोस्ट पर काम कर रहे हैं और लाखों रूपये कमा भी रहे हैं पर यह सब कोई बड़ी उपलब्धि नहीं है, इसे हम उपलब्धि नहीं मानते हैं, **हमारी उपलब्धि तो यह है कि वे सब समाज में तत्वप्रचार के कार्य में संलग्न हैं और देशभर में तत्वप्रचार करने वाली छोटी–बड़ी अनेक संस्थाओं का संचालन कर रहे हैं।**

वे सभी तीर्थंकरों और गणधरों की इस वाणी को सर्वव्यापी (क्षेत्र से) और सार्वकालिक बनाने में लगे हुए हैं।

हमारी उपलब्धि यह है कि हमारे बालक पारस बनकर निकलते हैं, जिनके संपर्क मात्र से लोगों की जीवनधारा बदल जाती है।

तत्त्वप्रेमी समाज से हमारी अपेक्षा है कि वे अधिक से अधिक मात्रा में विद्यार्थियों को महाविद्यालय में प्रवेश लेने हेतु प्रेरित करें।

महाविद्यालय में प्रवेश की योग्यता – 10वीं में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हो।

प्रवेश लेने हेतु संपर्क सूत्र – **पीयूष शास्त्री एवं सोनू शास्त्री,**

फॉर्म मंगाने का पता : श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, ए–4, बापूनगर, जयपुर–15, फोन–0141–2705581, 2707458

प्रशिक्ष
की

ण शिविर

यत्रिका

17 अप्रैल 2014, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

डॉ. भारिल्ल का विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष 2014 में भी धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। यह उनकी 32वीं विदेश यात्रा है। जिन भारतवासी बन्धुओं के परिवार या सम्बन्धी निम्न स्थानों पर रहते हों, वे उन्हें सूचित कर दें। उनकी सुविधा के लिए वहाँ के फोन, फैक्स एवं ई.मेल दिये जा रहे हैं, जहाँ वे ठहरेंगे। डॉ. भारिल्ल के कार्यक्रमों का आयोजन **(JAANA)** द्वारा किया जा रहा है। उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है -

क्र.	शहर	सम्पर्क-सूत्र	दिनांक
1.	लन्दन	**Dr. Dinkarbhai Shah 114, ASHURST ROAD, COCK FOSTER BARNET HERTS, EN4, 9LG (U.K.) Ph.-02084408994 Cell : 07712552973 Email : dinker_shah@yahoo.co.uk**	5 से 13 जून
2.	डलास	**Atul Khara R : 972-8676535 O : 972-424-4902 C : 469-831-2163 Email - insty@verizon.net**	14 से 20 जून
3.	न्यूयार्क	**Abhay/Ulka Kothari C : 516-314-6937 Emil-ukothari@verizon.net Dr. Hemant Bhai Shah Email-hemantshahmd@aol.com (M) 201-759-3202**	21 से 25 जून
4.	शिकागो	**Niranjan Shah (R) 847-330-1088 Bipin Bhayani (O) 815-939-3190 (R) 815-939-0056**	25 जून से 2 जुलाई
5.	टोरंटो	**Gyanchand Jain G.C. Jain Investments Limited 276, Carlaw Ave. SUITE # 200 TORONTO, ONTARIO, CANADA, M4M-3LI Ph. 001-4164691109 E-mail : gyanjain@studioloft.com**	3 से 14 जुलाई
6.	मुम्बई	**श्री अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल Mob. 09821016988**	15 जुलाई

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा का विदेश कार्यक्रम

डॉ. भारिल्ल की तरह ही उनके शिष्य डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर को विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी **(JAANA)** ने धर्मप्रचारार्थ अमेरिका और कनाडा में आमंत्रित किया है, उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है - 25 जून से 2 जुलाई - **मियामी (फ्लोरिडा)**, 3 से 13 जुलाई - **टोरंटो (कनाडा)**, 14 से 21 जुलाई - **शिकागो**, 21 से 28 जुलाई - **डलास।** आप उन्हीं स्थानों पर रुकेंगे, जहाँ डॉ. भारिल्ल रुकेंगे।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

आचार्य धरसेन दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय में -

प्रवेश हेतु अपूर्व अवसर

कोटा (राज.) : आचार्य धरसेन दि.जैन सि.महाविद्यालय के 7वें सत्र का शुभारंभ 25 जून से हो रहा है। महाविद्यालय में 10वीं कक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। छात्रों को जैनधर्म के सिद्धांतों के अध्ययन के साथ माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की वरिष्ठ उपाध्याय (12वीं) एवं राज. संस्कृत विश्वविद्यालय की शास्त्री (बी.ए.समकक्ष) डिग्री पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है। छात्रों के लौकिक विकास हेतु अंग्रेजी एवं कम्प्यूटर की शिक्षा भी प्रदान की जाती है।

यहाँ छात्रों के आवास, भोजन एवं शिक्षा की संपूर्ण व्यवस्था नि:शुल्क रहती है। जो भी छात्र प्रवेश इच्छुक हों वे निम्न पते से पत्र या फोन द्वारा प्रवेश फार्म मंगा सकते हैं। प्रवेश-प्रक्रिया 18 मई से 4 जून 2014 तक दिल्ली में लगने वाले प्रशिक्षण शिविर के दौरान संपन्न होगी।

संपर्क - पण्डित धर्मेन्द्र शास्त्री (प्राचार्य), मो. 8104615220, बजाज पैलेस, नगर परिषद कॉलोनी, छावनी, कोटा (राज.); पण्डित रतन चौधरी (निदेशक), मो. 9828063891, 8104597337; **फार्म मंगाने का पता -** 565, महावीर नगर प्रथम, कोटा (राज.) 324005

निबन्ध प्रतियोगिता में भाग लें

कोटा (राज.) : यहाँ दिग. जैन सोशल ग्रुप 'वर्धमान' द्वारा '**आधुनिकता की दौड़ में सिमटते संस्कार**' विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है, जिसकी शब्द सीमा 250-300 है। विजेता को प्रथम पुरस्कार 2000/- रुपये, द्वितीय पुरस्कार 1500/- रुपये, तृतीय पुरस्कार 1000/- रुपये एवं सान्त्वना पुरस्कार दिये जायेंगे। साथ ही दशलक्षण पर्व के दौरान होने वाले कार्यक्रम में दिनांक 6 सितम्बर को सम्मानित किया जायेगा। निबन्ध भेजने की अंतिम तिथि 15 अगस्त है।

डाक द्वारा भेजने का पता : (1) श्रीमती सीमा जैन, द्वारा सीमा आईसक्रीम पार्लर, (दिनेश गैस एजेन्सी के पास), 1-ट-13, विज्ञान नगर, कोटा फोन 0744-2422227, 09462311767 **(2)** श्रीमती रेखा जैन, बी-540, इन्द्राविहार, कोटा फोन 0744-2414101, 09460238455

प्रकाशन तिथि : 13 अप्रैल 2014

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127